भारत में राजपूतों का योगदान

सत्येन्द्र कुमार सिंह

वैदिक काल से लेकर 12वीं सदी तक भारत में हिन्दू संस्कृति के अनुसार राजा राजपूत ही होते रहे। यदि एक राजा अयोग्य होता तो प्रजा द्वारा उसके स्थान पर दूसरे राजपूत को राजा बना दिया जाता था। राजपूत शब्द का अर्थ ही होता है ''राजा का पुत्र''। किसी भी देश की संस्कृति उसकी प्राचीन विशेषताएँ, धर्म, जाति, भाषा एवं स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीत आदि पर निर्भर करता है। भारतीय संस्कृति का उल्लेख किया जाय तो प्राचीन हिन्दू संस्कृति ही प्रमुख हैं। हिन्दू संस्कृति में विकास में ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी का भेदभाव मिटा कर धर्म ग्रंथों का अध्ययन, चिंतन, मनन आदि करने तथा किसी भी गांव के किसी भी मंदिर में सभी को पूजा–अर्चना करने की व्यवस्था स्थापित करने में राजपूतों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं।